ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

वर्ष 47, अंक 20- एक प्रति, 5 रुपये
सोमवार 1 अप्रैल, 2024 से रविवार 7 अप्रैल, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 201 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष : 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र**

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में समस्त आर्यसमाजों की ओर से

## आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सोल्लास सम्पन्न

## ज्ञान ज्योति पर्व संपर्क महा अभियान का शुभारंभ आर्यजनों ने लिया 200 महानुभावों से संपर्क का संकल्प

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन समिति के अध्यक्ष, दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं जे. बी. एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी का स्वागत करते हुए अधिकारीगण

नई दिल्ली सीट से भाजपा की प्रत्याशी बाँसुरी स्वराज का स्वागत करते हुए आर्य समाज की नारी शक्ति



समारोह में उपस्थित हुए हजारों आर्य परिवारों के हर आयु वर्ग के महानुभाव
आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य और आर्य नेता गण

# समारोह के अवसर पर विशिष्ट महानुभावों का स्वागत एवं सम्मान

आर्य समाज के युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानंद जी को ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य स्मृति सम्मान से सम्मानित करते हुए अधिकारीगण

वर्तमान चुनौतियों से समाज को जागृत करने वाली पुस्तकों का विमोचन करते हुए आर्य समाज के अधिकारी

समारोह में सबसे बड़ी आयु के 101 वर्षीय श्री ओमप्रकाश भटनागर जी को किया गया सम्मानित

समारोह में नव दंपति को किया गया सम्मानित

समारोह में सबसे छोटी आयु 6 दिन के नवजात शिशु का सम्मान

सुन्दर रंगोली के साथ सेल्फी की व्यवस्था

ठंकारा के सफल आयोजन की बधाई देते हुए श्री योगेश मुंजाल जी

कविता पाठ करते हुए श्री धर्मेश अविचल

हॉलैंड से पधारी आर्य महिलाओं का किया गया अभिनंदन

होली मंगल मिलन समारोह में भव्य स्वागत द्वार पर
एक दूसरे का तिलक लगाकर अभिनंदन करते हुए अधिकारी एवं आर्य परिवारों के होनहार बच्चे

उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में टैटू, वी. आर. एवं गुब्बारों को का आनंद लेते हुए प्यारे बच्चे

प्रतिवर्ष की भांति की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

# 19वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

## महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती वर्ष पर ज्ञान ज्योति पर्व सम्पर्क महा अभियान का शुभारम्भः आर्यजनों ने लिया संकल्प

## स्वामी सच्चिदानन्द जी को दिया गया वर्ष 2024 का ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान

## सबसे बड़े वयोवृद्ध 101 वर्षीय आर्य डॉ० ओम प्रकाश भटनागर जी एवं सबसे छोटे बच्चे 6 दिन के नवजात शिशु तथा सबसे नवविवाहित जोड़े को किया सम्मानित

**समाज और देश को मजबूत करने, युवाओं को नशे से बचाने, पारिवारिक रिश्ते बचाने, अंधविश्वास निवारण, प्राकृतिक खेती अपनाने और अपनों को गले लगाने के आह्वान के साथ उमंग और उत्साह के वातावरण में आर्यों ने खेली फूलों से होली**

**200वीं जयन्ती के सफल आयोजनों के लिए किया गया ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का स्वागत एवं सम्मान**

पर्व त्यौहारों से सुसज्जित वैदिक संस्कृति में वासन्ती नवसस्येष्टि, (होली) के पर्व का अपना महत्व है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह का भव्य आयोजन 24 मार्च 2024 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कनॉट प्लेस, राजा बाजार में उल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर नवसस्येष्टि यज्ञ, मधुर भजन, बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास पर आधारित प्रेरक नाटिकाओं का मंचन किया गया। इसके साथ ही अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने नशे के विरुद्ध, पारिवारिक रिश्ते बचाने अपनों को गले लगाने, अंधविश्वास भगाने और प्राकृतिक खेती को अपनाने आदि गंभीर विषयों पर अत्यन्त प्रेरक प्रस्तुति देकर यह सिद्ध कर दिया कि आर्य समाज मानव कल्याण के लिए समाज को जागृत कर रहा है और सदा कराता रहेगा, इस कार्यक्रम में दिल्ली की सभी आर्य समाजों, आर्य परिवारों के हर आयु वर्ग के हजारों आर्य जनों ने भाग लिया।

**बच्चों के मनोरंजन एवं खेल के लिए उपलब्ध थे - टैटू, वी.आर., झूले, गुब्बारे और टॉफियां**

आचार्या डा. प्रीति विमर्शनी जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुए नवसस्येष्टि यज्ञ में भगवान यज्ञ से" भजन गाकर पूरे वातावरण को यज्ञमय कर दिया। इस भव्य और प्रेरक कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन आर्य परिवारों के होनहार बच्चों द्वारा किया गया। बच्चों की प्रस्तुति और उनके द्वारा ही कार्यक्रम का संचालन अति मनभावन सिद्ध हुआ। कार्यक्रम स्थल के मुख्य द्वार पर सभी आगन्तुकों का विधिवत चन्दन का तिलक लगाकर स्वागत किया गया, सेल्फी स्टैंड पर सभी आर्यों ने परिवार संहित सेल्फी खिंचवाई और बच्चों ने प्रसन्नता के साथ टैटू भी बनवाए, प्रवेश करते ही मधुर ठंडाई ग्रहण करते हुए सभी आर्यजन लगातार आगे बढ़ते रहे। हजारों की संख्या में आर्य नर-नारी उमंग-उत्साह और उल्लास से सराबोर नजर आए।

होली मंगल मिलन समारोह पर टंकारा में महर्षि की जयन्ती के ऐतिहासिक रूप से सफल कार्यक्रम की संक्षिप्त वीडियो

**सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले सभी विद्यालयों और बच्चों के ग्रुप को 200वीं जयन्ती के दिए गए उपहार**

श्रीमती सुधा रेखी एवं श्री राजेन्द्र कुमार रेखी, श्रीमती सरोज एवं श्री जगवीर आर्य, श्रीमती अंजली एवं श्री सागर शर्मा, श्रीमती सुरभी एवं श्री प्रवीण आर्य, श्रीमती सिमरन एवं श्री श्रवण आर्य, श्रीमती विजय लक्ष्मी एवं श्री रामलाल आहुजा, श्रीमती रोजी एवं श्री रवि आहुजा, आदि यजमानों ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। सभी यजमानों को यज्ञ ब्रह्मा सहित आर्य समाज के अधिकारियों ने पुष्पवर्षा करके आशीर्वाद दिया। बच्चों ने यज्ञ की महिमा को दर्शाने वाला "जल्दी प्रसन्न होते हैं दिखाई गई, जिसे देखकर उपस्थित जनसमूह भाव विभोर हो गया।

वर्ष 2024 का ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान आर्य समाज के विद्वान युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानंद जी को को प्रदान किया गया। उन्हें शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं 51 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया गया।

प्रतिवर्ष की भांति सबसे ज्यादा आयु के आर्य, सबसे छोटे बच्चे और सबसे नव विवाहित जोड़े को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया है। सबसे अधिक आयु के बुजुर्ग महानुभाव के रूप में 101 वर्षीय आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर जी, सबसे छोटी आयु के बालक के रूप में 6 दिन के नवजात शिशु और सबसे नव विवाहित दम्पति के रूप में 7 मार्च को विवाह बंधन में बंधे श्री ऋषभ और कनिष्का को प्रशस्ति पत्र के साथ-साथ आशीर्वाद भी प्रदान किया गया।

**युवाओं और परिवारों के लिए लगाए गए थे सैल्फी स्टैण्ड : ' # दयानन्द 200 ' पर किए गए ट्रैंड**

कार्यक्रम में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, अध्यक्ष दयानंद सेवाश्रम संघ और चेयरमैन जे बी एम, श्री योगेश मुंजालजी, कार्यकारी प्रधान, टंकारा ट्रस्ट, श्री आदेश गुप्ता जी, पूर्व अध्यक्ष बीजेपी दिल्ली प्रदेश, श्री सत्यानंद आर्य जी, प्रधान परोपकारिणी सभा, नई दिल्ली क्षेत्र से भाजपा की लोकसभा प्रत्याशी सुश्री बांसुरी स्वराज, बीजेपी की उम्मीदवार, नई दिल्ली लोकसभा, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली सभा, सभी वेद प्रचार मंडलों, आर्यवीर दल की शाखाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों और अन्य अनेक संस्थानों/प्रतिष्ठानों के अधिकारी उपस्थित थे।

**सेवा बस्तियों में यज्ञ प्रचारक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली स्थानीय महिलाओं को दिए प्रशस्ति पत्र**

इस अवसर पर हास्य रंग के साथ सुप्रसिद्ध कवि श्री धर्मेश अविचल जी ने आर्य समाज द्वारा संचालित अभियान नशा हटाईए-रिश्ते बचाइए आदि विषयों को आधार बनाकर सुन्दर कविता पाठ किया। सभी अधिकारियों ने आर्य समाज के मुख्य आह्वान पर आधारित पुस्तकों, महर्षि दयानन्द कॉमिक प्रतियोगिता, जिसमें 10 लाख के इनाम सुनिश्चित किए गए हैं, का विमोचन किया।

श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित आर्य नेताओं और अधिकारियों का परिचय देते हुए श्री योगेश मुंजाल जी के नेतृत्व में टंकारा में सफल आयोजन की बात कही, आपने श्री अजय सहगल जी के प्रति भी आभार जताया, सभी कार्यकर्त्ताओं और अधिकारियों को टंकारा के सफल आयोजन की बधाई दी और श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके जन्म और जीवन से जुड़े अहम बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जहां आप उद्योग जगत में सफलता का परचम लहरा रहे हैं वहीं आप आर्य समाज के सिद्धान्तो, मान्यताओं और महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ा रहे हैं। आपके परिवार की गौरव गरिमा का वर्णन करते हुए आपने कई जीवन्त उदाहरण भी दिए, जिन्हें सुनकर पूरा वातावरण आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञ नजर आया।

कार्यक्रम स्थल को तो बहुत सुंदर ढंग से सजाया ही गया था। किन्तु बैकड्राप पर होली की शुभकामनाएं और बीच में स्क्रीन पर पूरा कार्यक्रम का दृश्य अत्यन्त सारगर्मित और प्रेरक सिद्ध हुआ। सायं 5:30 से ही उपस्थित आर्यजनों के भोजन की व्यवस्था आरम्भ हो गई थी, जो समापन और अन्त तक लगातार चलती रही। बडे ही प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ। -*सम्पादक*

**सभी कार्यकर्ता महिलाओं पगड़ी पहनाकर किया नारी शक्ति वंदन : महिलाओं ने किया कार्यक्रम संचालन**

सम्पादकीय

**विभिन्न राज्यों की वनवासी जनजातियों द्वारा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए डिलिस्टिंग की मांग को लेकर किए जा रहे हैं प्रदर्शन**

# डिलिस्टिंग कानून लाना समय की पुकार है

**वनवासी-आदिवासियों की धार्मिक मान्यताओं को त्यागकर अन्य मतावलम्बी बन चुके लोगों को अनुसूचित जनजाति सूची से हटाने की मांग है डिलिस्टिंग**

भारत के कई राज्यों में इस समय एक सवाल कहो या बवाल पनप रहा है। आदिवासी या अनुसूचित जनजाति के लोग उग्र हैं और इसका कारण है एक पुराना मुद्दा। दरअसल साल 2022 में मध्य प्रदेश के धार, झाबुआ, अलीराजपुर, रतलाम, बड़वानी जिलों में बड़ी-बड़ी रैलियां हो रही थीं। हाथो में धनुष-बाण थे। किसी का आधा तन नंगा तो किसी के गले में गमछा था। 40-44 डिग्री तक तपती दुपहरी में भी हजारों की संख्या में आदिवासी जनजाति समाज के लोग डिलिस्टिंग की मांग करते हुए जिला मुख्यालय पर दस्तक दे रहे थे। इसके बाद तो यह मामला मध्य प्रदेश से निकलकर झारखण्ड, छतीसगढ़ समेत कई राज्यों में पहुंचा और एक शब्द हर जगह सुना दिया डिलिस्टिंग-डिलिस्टिंग।

मसलन भयंकर गर्मी में ये लोग मांग कर रहे थे कि जिन आदिवासियों ने ईसाई या अन्य मत को स्वीकार कर लिया है उन्हें अनुसूचित जनजाति की सूची से बाहर किया जाए। यानि उन्हें आरक्षण से डीलिस्टिंग किया जाये। ये मांग मान्यता की थी या अपने स्थानीय कुल देवी देवताओं की पूजा करने की परम्परा से। सब जानते हैं कि आदिवासी जनजाति के लोगों के अपने पारम्परिक कुल देवी या कुल देवता होते हैं। ये लोग अपने इन लोक देवी देवताओं की हजारो वर्षो से विधिवत पूजा अर्चना करते चले आ रहे हैं। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में अचानक यूरोप के एक कथित भगवान के नाम पर यह सीधे-साधे लोग मिशनरीज के चंगुल में फंसते जा रहे हैं। जहाँ कुछ सालों पहले तक अपने देवी-देवताओं में विश्वास किया करते थे। वहां अचानक गरीब पिछड़े इलाकों में बने झोपड़ीनुमा चर्च देखने को मिल रहे हैं। इन लोगों का धर्मांतरण किया जा चुका है। अब यह लोग ईसाई बन चुके हैं। लेकिन ऐसा करके भी ये कथित ईसाई भारतीय संविधान द्वारा जनजातीय समाज को दी गई सुविधा का लाभ ले रहे हैं। बस यही वो लिस्ट है, "जहाँ से लाभ ले रहे हैं और यही बाकि लोगों का विरोध है कि इन्हें डीलिस्टिंग किया जाये यानि अब लाभ ना दिया जाये।"

लेकिन खेल सिर्फ इतना भर नहीं है। असल में जनजाति वर्ग को विशेषाधिकार संविधान में उनके पिछड़ेपन और सशक्तिकरण के लिए सुनिश्चित किये गए हैं। इसका आधार विशुद्ध रूप से जनजाति पहचान है। जिसे संविधान के अनुच्छेद 341 एवं 342 में परिभाषित किया गया है। डिलिस्टिंग का मामला इसी संवैधानिक प्रावधान की बुनियाद पर खड़ा है। लेकिन कन्वर्जन ने संविधान का पवित्र उद्देश्य बिगाड़ दिया है। जैसे अभी तक जनजातीय समाज के नाम रामतोपनो, महादेव मुंडा, दुर्गावती उराँव जैसे हैं लेकिन ये लोग खुद को अन्दर से पीटर, सेमुअल, चेल्सी समझने लगे हैं। न केवल समझ रहे हैं बल्कि म.प्र, झारखंड, उड़ीसा, छतीसगढ़, गुजरात समेत पूर्वोत्तर के राज्यों में जनजाति वर्ग के हिस्से का 80 फीसदी फायदा कन्वर्जन के जरिये ईसाई या मुस्लिम हो चुके लोग उठा रहे हैं।

झाबुआ के लोग तो यहाँ तक बताते हैं कि जनजातीय समाज में मिशनरीज का दखल इतना अधिक आ चुका है कि परम्पराओं के सामने भी खतरा महसूस हो रहा है। कई गाँवो में 80 फीसद कन्वर्जन हो चुका है और गांव के आंगनवाड़ी से लेकर शिक्षक, नर्स, पटवारी ग्राम सहायक, सेल्समैन, पंचायत सचिव सभी लोग मिशनरी के साये से निकले नामधारी जनजाति है लेकिन असल में वे सभी ईसाई हैं। उन लोगों ने अपने दस्तावेजों में आज भी खुद को जनजाति के रूप में कायम रखा है ताकि जनजाति वर्ग के आरक्षण का फायदा मिलता रहे।

लेकिन सवाल इतना भर नहीं है, अब इसमें राजनीति का घाल-मेल भी समझ लीजिये। कैसे ये एजेंडा सफल होने दिया गया। क्योंकि डिलिस्टिंग का मुद्दा आज का नही है। देश के पूर्व नागरिक उड्डयन एवं संचार मंत्री रहे बाबा कार्तिक उरांव ने 70 के दशक में ही इस जनजातीय पहचान के संकट को समझ लिया था। इसलिए 1967 में संसद में उन्होने अनुसूचित जनजाति आदेश संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया था। इस विधेयक पर संसद की संयुक्त समिति ने बहुत छानबीन की और 17 नवंबर 1969 को अपनी सिफारिशें दीं। उनमें प्रमुख सिफारिश यह थी कि कोई भी व्यक्ति, जिसने जनजाति मत तथा विश्वासों का परित्याग कर दिया हो और ईसाई या इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया हो, वह अनुसूचित जनजाति का सदस्य नहीं समझा जाएगा। अर्थात कन्वर्जन करने के पश्चात उस व्यक्ति को अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत मिलने वाली सुविधाओं से वंचित होना पड़ेगा। संयुक्त समिति की सिफारिश के बावजूद, एक वर्ष तक इस विधेयक पर संसद में बहस ही नहीं हुई। बताया जाता है तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पर ईसाई मिशन का जबरदस्त दबाव था कि इस विधेयक का विरोध करें। ईसाई मिशन के प्रभाव वाले 50 संसद सदस्यों ने इंदिरा गांधी को पत्र दिया कि इस विधेयक को खारिज करें।

कांग्रेस से चुनाव लड़कर जीते बाबा कार्तिक उरांव जनजातीय समाज से आते थे। लेकिन उन्होंने अपने राजनितिक करियर की परवाह ना करते हुए इस मुहिम के विरोध में अपने राजनीतिक भविष्य को दांव पर लगाकर 322 लोकसभा सदस्य और 26 राज्यसभा सदस्यों के हस्ताक्षरों का एक पत्र इंदिरा गांधी को दिया, जिसमें यह जोर देकर कहा गया था की वे विधेयक की सिफारिशों का स्वीकार करें, क्योंकि यह तीन करोड़ वनवासियों के जीवन-मरण का प्रश्न हैं। किन्तु ईसाई मिशनरियों का एक प्रभावी अभियान पर्दे के पीछे से चल रहा था। नतीजतन विधेयक ठंडे बस्ते में पटक दिया गया।

*लोग तो यहाँ तक बताते हैं कि जनजातीय समाज में मिशनरीज का दखल इतना अधिक आ चुका है कि परम्पराओं के सामने भी खतरा महसूस हो रहा है। कई गाँवो में 80 फीसद कन्वर्जन हो चुका है और गांव के आंगनवाड़ी से लेकर शिक्षक, नर्स, पटवारी ग्राम सहायक, सेल्समैन, पंचायत सचिव सभी लोग मिशनरी के साये से निकले नामधारी जनजाति है लेकिन असल में वे सभी ईसाई हैं। उन लोगों ने अपने दस्तावेजों में आज भी खुद को जनजाति के रूप में कायम रखा है ताकि जनजाति वर्ग के आरक्षण का फायदा मिलता रहे।*

मामला सिर्फ इतना भर नहीं 16 नवंबर 1970 को इस विधेयक पर लोकसभा में बहस शुरू हुई। इसी दिन नागालैंड और मेघालय के ईसाई मुख्यमंत्री दबाव बनाने के लिए दिल्ली पहुंचे। मंत्रिमंडल में दो ईसाई राज्यमंत्री थे। उन्होंने भी दबाव की रणनीति बनाई। इसी के चलते 17 नवंबर को सरकार ने एक संशोधन प्रस्तुत किया की संयुक्त समिति की सिफारिशें विधेयक से हटा ली जाये। यहाँ तक कि बहस के दिन सुबह कांग्रेस ने एक व्हीप अपने सांसदों के नाम जारी किया, जिसमें इस विधेयक में शामिल संयुक्त समिति की सिफारिशों का विरोध करने को कहा गया था। कार्तिक उरांव, संसदीय संयुक्त समिति की सिफारिशों पर 55 मिनट बोले, वातावरण ऐसा बन गया, की कांग्रेस के सदस्य भी व्हीप के विरोध में, संयुक्त समिति की सिफारिशों के समर्थन में वोट देने की मानसिकता में आ गए। अगर यह विधेयक पारित हो जाता, तो वह एक ऐतिहासिक घटना होती। स्थिति को भांपकर इंदिरा गांधी ने इस विधेयक पर बहस रुकवा दी और कहा कि सत्र के अंतिम दिन, इस पर बहस होगी। किन्तु ऐसा होना न था। 27 दिसंबर को लोकसभा भंग हुई और कांग्रेस द्वारा वनवासियों के कन्वर्जन को मौन सहमति मिल गई!

बाबा कार्तिक उरांव वनवासियों से कहा करते थे कि ईसा से हजारों वर्ष पहले वनवासियों के समुदाय में निषादराज, माता शबरी, कण्णप्पा आदि हो चुके हैं, इसलिए हम सदैव हिन्दू थे और हिन्दू रहेंगे। हम हिन्दू पैदा हुए और हिन्दू ही मरेंगे। पर विधेयक नहीं आया, नतीजा आज वह 70 साल में कितनी विकराल हो चुकी है। स्वास्थ्य क्षेत्र में कुल जनजाति प्रतिनिधित्व का 67 फीसदी ईसाई और अन्य मत में जा चुके लोग कर रहे हैं। शिक्षा क्षेत्र में करीब 69 प्रतिशत आरक्षण का लाभ जनजाति की आड़ में मिशनरीज के जरिये कन्वर्जन कर चुके लोग उठा रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार 70 प्रतिशत तक ईसाई, मुस्लिम मत में जा चुके लोग जनजाति कोटे के लाभ ले रहे हैं।

भले ही उस दौरान ईसाई लॉबी के दबाब में भले ही इंदिरा गांधी ने कार्तिक उरांव और 348 सांसदों की अनसुनी कर दी हो लेकिन अब जिस तरह से डिलिस्टिंग का मामला देश भर में उठ खड़ा हुआ है। अगर देश की सरकार इस पर मुखर हो जाये तो कई राज्यों में वनवासी समाज का अस्तित्व बचा रहेगा। वरना उनकी अगली पीढ़ी अपने कुल देवी-देवता को भूलकर जीसस को ही अपना भगवान समझने लगेगी। यानि डिलिस्टिंग की मांग जायज है, किन्तु फिर भी आरक्षण में डिलिस्टिंग जैसे गंभीर मामले पर देश के प्रमुख राजनीतिक दल चुप क्यों हैं? - **सम्पादक**

### महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के आयोजनों की श्रंखला में

# हैदराबाद में आर्यों की विशाल शोभायात्रा एवं भव्य समारोह सम्पन्न

## पाखंड और अंधविश्वास को मिटाकर महर्षि दयानन्द ने किया समाज का उद्धार – बंडारू दत्तात्रेय, राज्यपाल हरियाणा

### आर्य समाज जैसा संगठन और महर्षि दयानन्द जैसा गुरु दुनिया में नहीं – विनय आर्य

हैदराबाद की भूमि से आर्य समाज का बहुत पुराना और गहरा सम्बन्ध है। यही वह भूमि है जहाँ भारत की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए महर्षि के अनुयायी समर्पित

राष्ट्र भक्तों ने वहाँ के निजाम को और उसकी धर्मान्ध सत्ता को उखाड़ फेंका था। आर्य समाज का यह क्रांतिकारी आंदोलन भारत के इतिहास में हैदराबाद सत्याग्रह के नाम से स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है और इस अमर सत्याग्रह के अमर शहीदों की स्मृति को आर्य समाज हर वर्ष श्रावणी पर्व पर मनाता है। इस ऐतिहासिक भूमि पर 18 फ़रवरी 2024 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर विशाल शोभायात्रा एवं भव्य समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें हरियाणा राज्य के माननीय राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय जी ने विशाल शोभायात्रा को ओम ध्वज दिखाकर निज़ाम कॉलेज से रवाना किया। इस शोभा यात्रा में भारी संख्या में आर्य नर-नारी, बच्चे, वृद्ध और महिलाएँ ऋषि दयानन्द का जय-जयकार करते हुए, आर्य समाज अमर रहे, ओम का झंडा ऊँचा रहे और सारे संसार को आर्य बनाने का आह्वान करते हुए लगातार आगे बढ़े, जिसमें आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य अत्यंत उमंग उत्साह और उल्लास से भरपूर थे। यह शोभायात्रा रविन्द्र भारती में एक समारोह के रूप में समापन हुई। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय जी ने अपने उद्‌बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए उनके महान उपकारों को याद किया और बताया कि महर्षि ने ही वेदों की ओर लौटने का संदेश संसार को दिया था उन्होंने अंधविश्वास और पाखंड का खंडन कर समाज का उद्धार किया। हैदराबाद के सत्याग्रह में आर्य समाज का योगदान और बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

– जारी पृष्ठ 6 पर

# नवादा बिहार में महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

### आर्यों के गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के लिए आगे आए युवाशक्ति – विनय आर्य

19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की देश व्यापी यात्रा में बिहार राज्य का अपना विशेष स्थान है। महर्षि जहाँ-जहाँ भी गए वहीं उन्होंने सत्य का प्रकाश किया, वेदों की अलख जगायी और मानव समाज को वैदिक पथ पर चलने की शिक्षा प्रदान की। महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर नवादा जिला आर्य सभा द्वारा आर्य महासम्मेलन का आयोजन 16-20 मार्च 2024 तक संपन्न हुआ। इस अवसर पर भव्य वेद यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य नर नारियों ने भाग लेकर वैदिक धर्म और संस्कृति का प्रचार किया। 7 किमी. लंबी इस वैदिक शोभा यात्रा में हज़ारों लोग सम्मिलित रहे और सभी ने आर्य समाज और मर्षि दयानन्द सरस्वती के नारों से पूरे वातावरण को गुंजायमान कर दिया। साथ में यज्ञ निरंतर की झाँकी भी चलती रही, जो एक रथ के रूप में अत्यंत प्रेरक सिद्ध हुई। 17 मार्च को आचार्य संजय सत्यार्थी जी के ब्रह्मत्व में विश्व कल्याण यज्ञ हुआ। सायंकालीन सत्र में स्वामी सच्चिदानंद जी और श्री गौतम खट्टर जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन से आर्यजनों और उपस्थित समूह को संबोधित किया। नरेश दत्त के भजन और बहन प्रियंका आर्या जी का वैदिक संदेश भी अत्यंत प्रेरक रहा। 18 मार्च को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने युवाओं को संबोधित करते हुए विशेष संदेश दिया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में आर्य समाज के इतिहास को आधार बनाकर महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी श्रद्धानंद और अन्य महापुरुषों के योगदान और बलिदान का वर्णन करते हुए परोपकारी सेवा कार्यों से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया। आप की प्रेरणा से समापन समारोह में लगभग 50 से ज़्यादा नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को स्वयं अपनाने और प्रचार प्रसार करने का संकल्प लिया। विनय आर्य जी ने आर्य समाज मठ गुलनी जो एक ऐतिहासिक स्तंभ है, जहाँ से धर्मांतरण के खलिाफ संघर्ष किया गया था उसका भी अवलोकन किया और सबको बताया कि यहीं से ईसाइयों द्वारा कराए जा रहे धर्मांतरण पर रोक लगाने का कार्य हमारे महापुरुषों ने किया था। सायंकालीन सत्र में विनय आर्य जी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। इस सम्मेलन के संयोजक श्री कुंदन

– जारी पृष्ठ 6 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

# गंगा तट पर सिंहनाद

## (सन् 1867 से 1869 के सितम्बर मास तक)

*गतांक से आगे –*

राव साहब बोले कि तुम गंगा जी को नहीं मानते ? महर्षि जी ने कहा कि जितनी गंगा जी हैं उतनी मानते हैं।'

कर्णसिंह- 'कितनी ?' महर्षि जी- 'हम लोगों की गंगा जी तो कमण्डलु ही हैं।' इस पर कर्णसिंह ने गंगास्तुति पर कुछ श्लोक पढ़े।

महर्षि जी- 'यह सब तुम्हारी गप्प है। वह केवल पीने का पानी है, उससे मोक्ष नहीं हो सकता, मोक्ष तो केवल कर्मों से होता है। तुमको पोपों ने बहकाया है। फिर महर्षि जी ने उसके माथे पर तिलक छाप देखकर कहा-तुमने क्षत्रिय होकर मस्तक पर यह भिखरियों का चिह्न क्यों धारण किया ?'

कर्णसिंह- 'हमारे स्वामी के सामने आपसे बातचीत भी न होगी, तुम उनके सामने कीड़े के तुल्य हो, तुझसे उनके जूते उठाते हैं।'

महर्षि जी ने हंसकर उत्तर दिया- 'अपने गुरु को शास्त्रार्थ के लिए बुलाओ, यदि उनमें आने की सामर्थ्य न हो तो हम वहां चलते हैं।'

इस पर क्रोध में आकर कर्णसिंह बेतुकी कहने लगा और महर्षि जी को धमकाने लगा। धमकी में आनेवाले व्यक्ति दूसरे ही होते हैं। महर्षि जी ने धमकी के उत्तर में चक्रांकित सम्प्रदाय का बड़े बल से खण्डन किया और अन्त में कहा कि तुम कैसे क्षत्रिय हो जो रामलीला में लौंडों का स्वांग भरवा, महापुरुषों की नकल उतरवा उनको नचवाते हो ? अगर तुम्हारी बहन-बेटी को कोई नचवावे तो तुम्हें कैसा बुरा लगे ?'

यह सुनकर कर्णसिंह की आंखें लाल हो गईं, नथुने फड़कने लगे और हाथ तलवार की मूठ पर पहुंच गया। कर्णसिंह का एक पहलवान आगे बढ़कर महर्षि जी पर हाथ डालने लगा। – *क्रमशः*

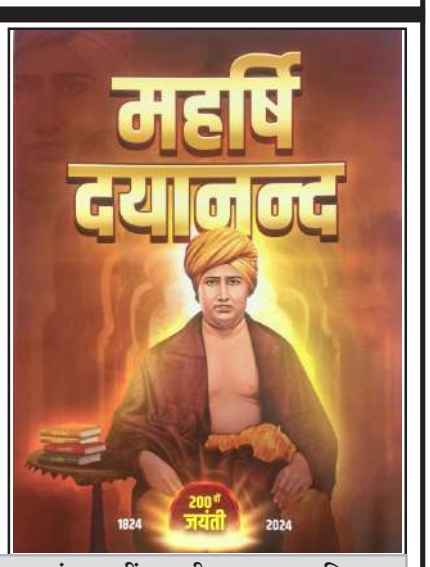


पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित
जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

# Fight Against the Garh (Strong Base)

Anand Bagh of King Madho Singh is famous in Banaras. There was a great hustle and bustle in the garden on Kartik Shudi 12 of Samvat 1926. A few days ago a Sanyasi wearing Langot (underwear) only stayed in the garden. All the famous Pandits of Kashi started coming to him for testing their power. Swami Dayanand came from Rajpur on 22nd October, 1869 and stayed in that garden. There was a great movement in the city after he came to that garden. Dayanand, who was a great reformer and believed in complete independance in field of wisdom and Dharm, had entered the field of war. He believed in only one Parme-shwar (God) as his helper. He felt that Banares was a strong Fort of misbelief and believer of following the tradition given to them by their ancestors. Dayanand had come to finish wrong belief and tradition. Kashi had been considered strong of Vidya and wisdom since olden times. Many Maha Mahopadhyays lived in various streets of Kashi. Swami Dayanand wanted to remove bad traditions and beliefs from the city. Pauranik Dharm could not be declared defeated until Kashi was defeated. Pandits who were defeated in other cities, moved towards Kashi. Some talked about Swami Vishudhanand's views, some others mentioned name of Pt. Raja Ram Shastri to make the opponent feel afraid. The 'Lion-Dayanand' decided to enter the cave and challenge the lion's that is he reached Kashi. He stayed in Madho Garden and challenged all hoisting his Dharm Flag.

*To be Continue.....*

पृष्ठ 3 का शेष

### नवादा बिहार में महर्षि दयानन्द जी .....

आर्य जी के पिता श्री सरजुग महतो जी ने आर्य समाज को भूमिदान की थी जिसके लिए उनका भी अभिनंदन किया गया। पूरे कार्यक्रम की सफलता में बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रमेन्द्र गुप्ता, बच्चु लाल आर्य, भोला प्रसाद आर्य, रंजीत कुमार आर्य, राकेश आर्य, जयदेव कुमार आर्य, सुधीर कुमार, विनोद शास्त्री, जय प्रकाश आर्य, जिला प्रधान नारायण आर्य, राम प्यारे प्रसाद, संजय आर्य, रविन्द्र आर्य, अशोक आर्य और हरिनारायण प्रधान आदि उपस्थित रहे। श्री इंदल आर्य जी के नेतृत्व में आर्य वीर दल का शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ और आर्य वीरों का व्यायाम प्रदर्शन अत्यंत प्रेरक सिद्ध हुआ। – **मन्त्री**

पृष्ठ 3 का शेष

इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री समुद्राल वेणुगोपालाचारी, आचार्य उदयन, डॉ. धर्म तेजा एवं डॉ. विद्याधर आदि महानुभावों ने दीप प्रज्वलित किया। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने सारगर्भित संदेश में उपस्थित आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज जैसी संस्था और महर्षि दयानन्द जैसा गुरु पूरे संसार में नहीं है। आर्य समाज के साथ जुड़कर महर्षि के बताए हुए रास्ते पर चलना हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है। उन्होंने आर्य समाज के प्रेरक इतिहास के पन्नों को खोलते हुए कहा कि हमारे महापुरुषों ने महर्षि की प्रेरणा से कन्याओं के लिए गुरुकुलों की स्थापना की। उन्होंने महात्मा नारायण स्वामी द्वारा स्थापित नैनीताल गुरुकुल का भी उदाहरण दिया। उन्होंने बताया कि उस समय कन्याओं, हमारी बेटियों को बेबस और मजबूर लोग अब उनकी मंडी लगाया करते थे। इससे भी दुखी होकर महात्मा नारायण स्वामी ने नैनीताल के राम तल्ला में गुरुकुल के स्थापना की, जो आज भी लगातार चल रहा है। महर्षि दयानन्द के उपकारों को याद करते हुए आपने कहा कि चाहे विधवाओं का उद्धार हो या स्वदेशी और स्वराज्य का उद्घोष हो, सत्यार्थ प्रकाश का वैदिक प्रकाश हो या सत्य का उजाला हो, ये सब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की ही देन। ऋषि दयानंद के त्याग, तपस्या और बलिदान को स्मरण करते हुए आपने स्वामी श्रद्धानंद को भी नमन किया और उनके बलिदान को भी याद किया। आपने देश की वर्तमान स्थितियों के प्रति समाज को जागरूक करते हुए बताया कि महर्षि की शिक्षाएं जितनी उस समय प्रासंगिक थी और आज उससे भी ज्यादा उपयोगी हैं। आज जरूरत है मानव समाज को जगाने की, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी। वर्तमान चुनौतियों का वर्णन करते हुए आपने बताया कि आज जरूरत है रिश्ते बचाने की, अपने भाइयों को गले लगाने, प्राकृतिक खेती अपनाने की, वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करने की, आज ये सब कार्य कितने जरूरी हैं इसका सटीक और सच्चे उदाहरण प्रस्तुत करके मानव समाज को संकल्पित होने का आह्वान किया। आपने इस भव्य और विशाल आयोजन के लिए सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए बधाई दी। – *मन्त्री*

# आर्य विद्यालयों एवं आर्य परिवारों के बच्चों द्वारा महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती एवं देश की वर्तमान चुनौतियों के संदर्भ में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रेरक प्रस्तुति


















## फूलों की होली से महक उठे आर्यों के मन

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 01 अप्रैल, 2024 से रविवार 7 अप्रैल, 2024
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPS, DRMS, दिल्ली -6 में पोस्ट करने का दिनांक 04/05/06/अप्रैल 2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 अप्रैल, 2024

# नव सस्येष्टी यज्ञ के साथ हुआ समारोह का शुभारम्भ

आचार्या डॉ० प्रीति विमर्शनी जी के ब्रह्मत्व में नव सस्येष्टि यज्ञ करते हुए यजमान महानुभाव







नव सस्येष्टी यज्ञ में यजमान के रूप में आहुति देते हुए श्रीमती सुधा रेखी जी एवं श्री राजेन्द्र रेखी जी, श्रीमती सरोज आर्या जी एवं श्री जगबीर आर्य जी, श्रीमती सुरभि आर्य एवं प्रवीण आर्य ,श्रीमती सिमरन आर्या जी एवं श्री श्रवण आर्य जी, श्रीमती अंजली जी एवं श्री सागर शर्मा जी, श्रीमती विजय लक्ष्मी जी एवं श्री रामलाल आहुजा जी, श्रीमती रोजी आहुजा जी एवं रवि आहुजा जी अन्य महानुभाव



ज्ञान ज्योति पर्व संपर्क महाअभियान के शुभारंभ अवसर पर 200 लोगों से संपर्क का संकल्प करते हुए आर्य नारी शक्ति एवं महानुभाव



फूलों की होली खेलते हुए मुख्य अतिथिगण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसेट प्रिंटर्स यूनिट नं. 21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली -92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह

Foto Graphics 9811331874